आपातकाल में सृजन फुलवारी

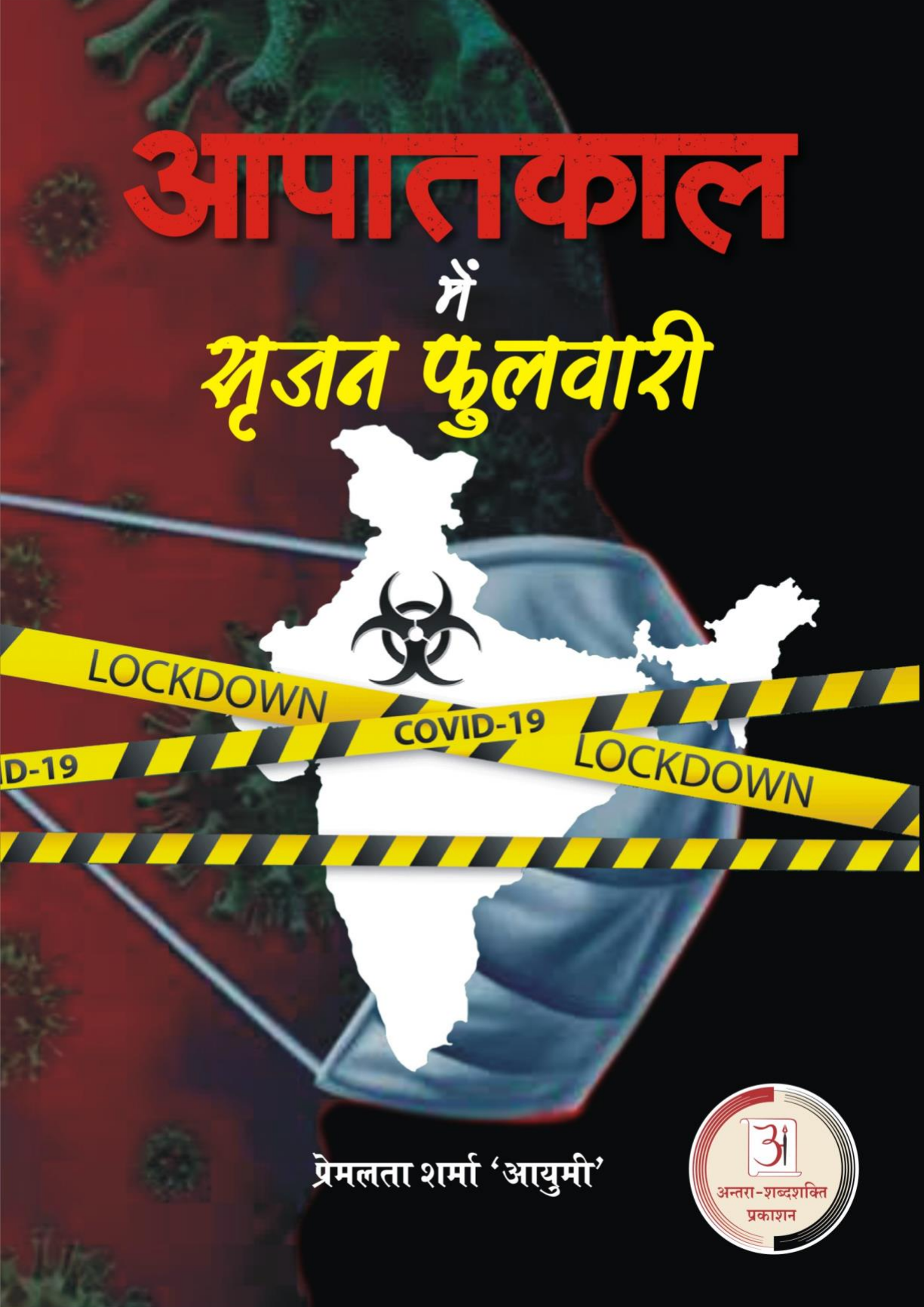

प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-127-5
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, **प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'**
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY PREMLATA SHARMA 'AYUMI'
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	माँ	6
2.	यही तो तपस्या है	7
3.	वेदना मन की	8
4.	घोसला	9
5.	जिन्दगी	10
6.	सियासत	11
7.	टेसू	12
8.	निराशा में आशा-खेजड़ी का पेड़	13
9.	सच की शव यात्रा	14
10.	गमले की तुलसी माँ	15
11.	शोहरत	16
12.	वो सुबह कभी तो आयेगी	17
13.	सो रही हूं चिर निद्रा में	18
14.	जीत जायेगे कोरोना जंग	19
15.	पेड़ करता है सवाल	20
16.	नारी	21

माँ

देह में तुम प्राण जैसी, मन में हो सुविचार जैसी।।
हृदय मंदिर में तुम देवी, संध्या की तुम प्रर्थना जैसी।।

आँखों में तुम स्वप्न सलोने, स्याह निशा मे दीपक जैसी।।
भोर की स्वर्णीम किरण तुम, ईश्वर की उपासना जैसी।।

तूफानों में माँझी बनकर, खेती हो पतवार जैसी।।
पतझड़ों की शीतल छाया, खिजा मे बहार जैसी।।

जीवन की तपती दुपहरी, मंधिम चलती व्यार जैसी।।
स्वार्थ, लोभ की भीड-भाड में, निःस्वार्थ निजता जैसी।।

हो मरूभूमि या मृगमरीचिका, शीतल बरखा फुहार जैसी।।
तन,समर्पित मन समर्पित, हृदय में तुम धड़कन जैसी।।

जीवन पथ की हो प्रदर्शक, थकन में आराम जैसी।।
क्या लिखूं, जितना लिखूं, कम है,
तुम माँ, मेरी, गीता या, रामायण जैसी।।

यही तो तपस्या है

आज दुनिया पर कोरोना महामारी का संकट।
एसी विपदा की घड़ी में, चौबीसों घंटे कम लगे।
चौकस, वो हर गली सड़क, नुक्कड़ पर तैनात।
त्याग कर अपना सुख'चैन, भूलकर अपनी भूख प्यास।

पूरी सतर्कता, निष्ठा, ईमानदारी से निभा रहे कर्तव्य।
हमारे सुरक्षा कवच, पुलिसकर्मी बहादुर भाई।
अस्पतालों में निर्भय हो, इलाज करते डाक्टर और नर्स।
अपनी जान की परवाह किए बिना, जैसे ईश्वर के प्रतिनिधि।

मौत से जूझते लोगो के, भगवान से,
लोगों के प्राणों की रक्षा करते, ड्यूटी कर रहे।
संकट की दुःखद घडी मे,
जन सेवा में तत्पर समाज सेवी विभिन्न संस्थाएँ, हस्तियाँ,
सड़कों पर मजबूर लोगों को खाना बाँटते ये फरिश्ते।

देश के वीर, सहृदय सपूतों,
संकट में, मानवता के लिए तुम्हारे, ये प्रयास
यही तो ईश्वर की सच्ची सेवा है।
यही तो सच्ची तपस्या है।

ईश्वर तुल्य तुम, हमे गर्व है, तुम पर।
गर्व है तुम्हारी निष्ठा, समर्पण, सजगता,
और सहयोग पर,
तुम्हे सत-सत नमन।

वेदना मन की

वेदना मन की, इतनी अपनी सी लगती है!
जन्म-जन्म का रिश्ता जैसे, परछाई सी लगती है।
अंतर्मन के कोने मे ,दुवकी जैसे मासूम शिशु ।
रातो मे ये, मचल-मचल कर, मुझे जगाया करती है।
वेदना,,,,,,।

कभी सुलगती अंगारों सी, हो जैसे अग्नेह।
दुख की आँधी कभी आती, चमकती है दामिनी जैसी।
मन मस्तिष्क मेरे, सदा सक्रिय रखती है ।
वेदना,,,,,,,।

में और मेरी वेदना अक्सर सोचा करते है ।
हम दोनो एक दूजे में, खोये -खोये रहते है।
आँखों मे चल चित्र भाँति, सदा तैरती रहती है।
वेदना मन, की इतनी अपनी सी लगती है।

घोसला

हाय, हमारे वो पेड़, तिनका-तिनका जोड़जहाँ हम नीड़ बनाते थे ।
हुये लहुलुहान, घायल वो, काट कर लोग नित घर बनाते है।।
हो सर्दी या बारिस हमें कोई डर न सताता।
जहाँ वृक्षों के पत्तो में छिप, हम रात बिताते थे।।

उदित होती जब स्वर्णिम, उषा की पहली किरण।
हम छोड़ घरौंदा, गीत एक सुर में गाते थे।।
लुट रही हैं हमारी बस्तीयाँ, हम दर-दर भटकते अब।
मिले कहाँ दरख्त हमारे? जहाँ हम सुकून पाते थे।।

भूल भूख और प्यास जुटाते थे हम तिनका।
होता था अनवरत परिश्रम, सजाते थे घोसला।
और हमारे प्यारे अंडे जिन्हें, हम पंखो से सहलाते थे।
नन्हे चूजों की किलकारी, आतुर होता हमारा मन।

बैठे लगन लगाये फिर, न दाना चुगने जाते थे।।
एक-एक कर जब चूजे होते, मन हमारा खुशी से झूमे।
चींची कर वो हमें पुकारें, हम उड़-उड़ आ जाते।
और बारी-बारी से, हम दाना उन्हे चुगाते थे।।

पूरा-पूरा दिन गुजरे, वो घोंसले से निकले।
डर-डर जाते सहमे ठिठकें, करते इशारा हौसला देते।।
फिर, छोड़ हमें वो अपनी, उड़ान खुद उड़ जाते थे।।
भरी आँखों से हम, रह जाते एकदूजे को देखते।

हुई पूरी जिम्मेदारी मौन, रह हम दोनों सोचे।
खो जाते यादों में फिर, साथियों संग उड़ जाया करते थे।।
छीनते है नित पेड हमारे, काटकाट शहर ले जाते।
दुष्ट मानव बेरहमी से हमें, बेघर कर जाते है।

जिन्दगी

चाहती हूं जिन्दगी, तुझे नग्मा सा गुनगुना लूं मैं,
सुबह की हल्की धूप संग, खुशबू सी महका लूं मैं।।

छू लूं आस्मां न रहे नाकामियों से गिला ,
हौसला बन फिर सपनों को, सजा लूं मैं।।

कब से हृदय में दुःखों के, काफिले से लगे,
खुशियाँ गुम हुई? अब कैसे पता पा लूं मैं।।

इन तमाम अंधियारों से अब डर नही लगता।
चाहती इतना बस, दिये सी टिमटिमा लूं मैं।।

अच्छे दिन सुधियों में आकर ही चले जाते थे।
कोशिश है हकीकत में अच्छे दिन पा लूं मैं।।

जो वक्त आज है मेरा, ये तो मेरी पहचान न था।
साजिशों की भीड़ थीं, खुद का पता पा लूं मैं।।

एक कहानी सी बन गई, अथक परिश्रम की मेरे।
चाहती हूं अब, दुनिया को सुना लूं मैं।।

फीकी न पड़ने दी अपने कर्त्तव्यों की वो महक।
उम्मीद है की जिन्दगी तुझे, जिदांदिली से गुनगुना लूं मैं।।

सियासत

देख लये सियासत के सबई रंग तब।
नेताजी के मुहल्ला में हुडदंग मची जब।।
मंगुआ की गइया क्या गई, मुखिया जी के खेत में!
मंगुआ विचारो रोये, हाथ जोड़े नेताजी के क्षेत्र में।।

ओर दो-चार चमचे हेकड़ी दिखाते फिरे।
का करें, मुखिया जी के आदमी थे, कछु ने बतियात बने?
एक तो गरीबी, उसपर बैला बीमार थो।
बारिश ने भी कसर ने छोडी, झोपडी वही जात है।।

बिटिया सयानी भई, चिंता सताती है।
दहेज के लोभियों को शर्मई ने आत है।।
पइसा सुई लिये, मार वहुत खाई हती।
पुलिस ने सुई आये दिन घर से उठाये हते।।

टेंशन ओर पुलिस की मार, न झेल सका मंगुआ।
अधमरे को चौराहे पर छोड़ गये दरोगा।।
फिर क्या था विपक्ष ने, मंगुआ को लिया हाथो हाथ।
मंगुआ छाये फिर, टी.वी. पर रातोंरात।।

कितनो हल्ला भओ खूब बिके अखबार तब।
पर अंत मे मंगुआ पर, मोमबत्ती ले मार्च हुऐ।।
कुछ न मिला सिला, वहाँ दी गई अस्थियाँ।
शांत थी गलियाँ क्योंकि, पैसों से दबा दी गई थी अर्जियां।

टेसू

वो पत्तों से विहीन, कब से खड़ा था!
पूर्णत: पत्तों से विहीन!
बदलते समय के साथ
एक-एक कर सारे पत्ते,
साथ छोड़ जमीदोश हो गये।

हवा के झोंके के साथ, देखते ही देखते।
नजर से ओझल हो गये सारे।
टूट पड़ा था फिर जैसे दुख का पहाड़।
अब मुश्किल था,
अकेलेपन में खुद को खड़ा रख पाना।

हवा के झोंकों की दिशा को पहचान
खुद को लचीला कर, उस दिशा मे झुक जाना।
साहस और धैर्य को थामे,
प्रतिक्षा करना सुख के दिनों की।
पतझड़ के बाद, आने वाले बसंत का।

फिर मौसम के बदलने पर, पत्ते आने का इंतजार।
फूलों से लद जाने का समय।
दुख के बाद सुख का, मौसम फिर आया।
विसरा दिये वेदनाओं के दिन।
सुर्ख फूलों का फिर मौसम आया,
टेसू फिर महक अपनी बिखरा रहा।

निराशा में आशा-खेजड़ी का पेड़

बीते समय का दुख, न बिसरा तो,
हावी होता है वो निर्भय हो, वर्तमान और फिर भविष्य पर।।
और अपनी स्याही मे रंगता मन मस्तिष्क को।
जिस पर कुछ अच्छे पलों की भी चित्रकारी की
कोशिश, हिम्मत, हौसला कर उकेरी थी।

हृदय तल कर देता है स्यामपट सा स्याह वो।
सारी स्वर्णिम आकृतियाँ गुम हो जाती है।
किसी चल चित्र की भांति स्मृतियाँ,
अनवरत, बिना रूके बिना थके
चलती है मंद गति से, धीमी चलती बयार सी वो।

अपना रूख उजालों की तरफ करती कहाँ है?
खोई रहती है तमाम तकलीफ की यादों में।
अब तक जिन्हे हृदय में बसाये, मायूस वो गहराती निशा सी।
परछाई सी हरदम साथ लिए,
हमसफर सी उन तकलीफों के साथ।।

दिशा दो न! वर्तमान के सुख की तरह।
महसूस करो तो जो है उन पलों की खुशी को।।
भूत और वर्तमान के अन्तर को पहचानो तो
मन की आँखों से देखो वो दुख हावी है सुख पर अबतक?
जो बीत चुका कब का, जो है उसका स्वागत तो करो!

देखो न! उस तपते रेगिस्तान में,
किस साहस से खड़ा वो खेजड़ी का पेड़।
एकदम हराभरा, स्वास्थ्य तंदुरुस्त।
नहीं हावी होने देता वो दुख की भीषण गर्मी और तपन।
अपनी तकलीफ भूल लोगों को, निःस्वार्थ छाया दे मुस्कुराता।
किसी साहसी योद्धा सा है वो कितना बड़ा संदेश देता।
दुख को स्वयं पर हावी न होने का।

सच की शव यात्रा

निकली जब सच की सब यात्रा,
मोम-मोम सब पत्थर हो गये।

पडे आँसू मन के छालों पर,
घाव सूखे सब हरे हो गये।

सजाई देखकर जिन्हें उम्मीदों की आरती,
वो फरिश्ते से जाने कब इंसान हो गये।

उजले कपड़ों में कितने ही दागदार थे?
जरा नजरें क्या उठी आइना हो गये।

सुख में अपने सब आसपास थे,
दुख मे उनके बसेरे घरौंदों मे हो गये।

दुख जो अब तक तिल था पहाड़ हो चला।
अश्क आँखों के जैसे समंदर हो गये।

गमले की तुलसी माँ

स्वर्ण सी रश्मियाँ लिए तुम, आ जाते थे मेरे आँगन में।
और फुदकती आँगन की गौरैया, उड़ खिड़की से झाँका करती थी।
चलती थी तभी मंद-मंद बयार, खुश्बू आती थी बगिया से।
चुन-चुन लाती थी फूलों को, गुथती में रोज नई एक माला।।
तितलियाँ आती, नित सज श्रृंगार कर, पहने हो मानो नित वस्त्र नये
भंवरे गुनगुन तितली से कहते, सीखे हो जैसे गीत, प्रीत के नये।।
आँगन के कोने का आम का वृक्ष, शीतलता कितनी देता था।
आस-पड़ोस के सारे पंछी, अपने पास बुला लेता था।।
और सारे मिल इतना बतियाते! जैसे वर्षो वाद मिला हो कोई?
मेला सा लगता था पेड़ पर, कलरव होता कर्ण प्रिय।।
तोता-मैना जैसे अंवियों को, चख-चख नीचे टपका देते।
और फुदकती गिल्लू झट-पट गिरती अंबिया चट लेती।।
झुकी हुई डाली पर झूला, मुनिया गुड़िया झूला करती थी।
खेत से आते दादू को देख, झूला छोड़ दौड़ पड़ती थी।।
जंलग से लौटती श्यामा, कल्लू कांधे पर बछड़ा लिए आता।
उस दिन तो जैसे घर में, नन्हे बछड़े का, जन्मोत्सव मन जाता।
पिताजी देते कल्लू को फिर नई परधनी और कुर्ता।
कल्लू नहलाता खुशी-खुशी श्यामा को और बछड़ा।।
कितना अपना था सब कुछ, वो गोबर का लिपा पुता घर और आँगन।
आज दीवारें बातें करती, बिल्डिंग हुआ था घर आँगन।।
गमले मे तुलसी मैया, महसूस घुटन करतीं, कहती।
सच-सच कहना बिल्डिंग वालों क्या, एसी घुटन तुम्हे होती?
मन करता है ले चलो मुझे उस पुराने गाँव के खुले आँगन में
जिसके कोने मे मेरा सदन हो,
हो खुली शीतल मंद पवन, सुख चैन की छाया मिलती हो।।
सुर मिलते कलरव करते पंछियो के सुर में फिर।
आँगन मे फिर बछड़ा श्यामा होती आँगन चूमती फिर स्वर्ण प्रभा,
मुस्कुरते निकले जहाँ रवि।
सच्चा सुख माँ के आँगन का, मिलता हो जैसे स्वर्ग वहीं।

शोहरत

ख्वाहिशों के तुम पंख बन,
मेरा आकाश अनंत तुम।
मेरे जीवन के नाविक से,
समंदर में तुम पतवार बन।।

घिर जाऊं गर तूफानों में,
लहरों मे न समां जाऊं,
तब हाथ बड़ाना तुम अपना,
डूबते का तिनका बन जाना।।

इन भीड़ भरें गलियालों में,
सिर्फ स्वार्थ की रज उड़ती है,
एकांत मेरे उर का आँगन,
निःस्वार्थ प्रेम बन तुम आना।।

एक धुन प्रीत की खींच ले मुझको,
बिन पैर हृदय दौड़ा आए,
सांसों मे सरगम,फिर नग्मा
होठों पर गजल तुम हो जाना।

अपनेपन की मुझमें है तृषा,
नही तुमसे 'शोहरत' माँगूंगी,
कहीं टूट के कभी बिखर जाऊं न,
हिम्मत का संम्बल हो जाना।

वो सुबह कभी तो आयेगी

तुम बिन भर गया वेदना से मेरा,
यह हृदय कलश।
पारावार ज्यों ठहरा कोई,
नयन अविरल थे सजल।।

मिल रही थी मानो कोई,
अश्रु की तरणियाँ।
स्वागत करते नेत्र कृपण,
आतुर सी थी खामोशियाँ।।

उम्मीद,पखेरू तिनका जुटाता,
खुशियों का नीड़ हो।
आँधियाँ सुधियों की आती
झकझोर देती विटप को।।

जीवन लगता बिन मनोरथ,
दिन ढलते निरूद्देश्य।
बंजर सा मन का हर कोना,
जैसे हो कल्पद्रुम विहीन।।

आशायें कुम्हला गई थी,
मरूभूमि था हृदय तल।
खुशियों के दिन, मृगमरीचिका
कांटो भरी थी डगर।।

काश, तुम हमसे आ मिलो,
अपलक तुम्हे निहारूगीं।
खिल उठेगी मन की बगिया,
वो सुबह कभी तो आयेगी।

सो रही हूं चिर निद्रा में

मेरी माँ,
सो रही हूं आज थक कर अब मैं,
चिरनिद्रा से मुझे न जगाना माँ।
मुझे हृदय में रखना तुम जगाये,
पीड़ा मेरी कभी न भुलाना माँ।।

रोक सको तो रोको अँधियारा न आ पाये।
डर लगता है सन्नाटे से माँ।।
चीख मेरी तुम शायद न सुन पाओगी।
माँ, तुम लेकिन मेरी चीत्कार सुनते रहना।
मेरी आवाज बनकर तुम,
बेटियों को न्याय मांगना माँ।

घिस जायेंगी एड़ियाँ, पैरों मे शायद छाले भी होगें।
आस निराश में तुलेगा मन,
पर हिम्मत न हारने देना माँ।
पापियों की करनी, मेरी वेदना, दुनिया को समझाना माँ।
फाँसी सिर्फ फाँसी तुम मांगना
तनिक न घबराना माँ।

मैं तो श्राप उन्हें देती हूँ, जन्म-जन्म तक भटकेंगें,
अच्छा होता मेरी आँखों के सामने
फाँसी पर वो लटके होते।
चैन से सो पाती मैं, वेदना मेरी कुछ तो कम होती।
कहीं कुछ पापियों के हाथों,
नोंच-नोंच फिर कोई बेटी, न खून के आँसू रोती।

मुझे रौंदने वालों तुमको, सात वर्षो में फांसी हुई !!
जी जाऊं मैं मन चाहता था,
तब, तुम्हारे लिए क्या सजायें चुनती?

जीत जायेगे कोरोना जंग

लौट चली जिन्दगियाँ, शहर से गांवों की ओर।
बसने लगी फिर झोपडियाँ, चली शहर को छोड़।।

शोरगुल, सब गलियाँ सड़कें देखो, सन्नाटे में तब्दील हुए ल।
तपती धूप, गर्मी, और भूखे प्यासे पैदल,चलने को मजबूर हुए।।

न बचा जैबों में पैसा, न ठहरने की वजह कोई।
यहाँ से वहाँ फिरते सड़कों पर, न सवारी बस की, न ही रेल कोई।।

खाकी वर्दी के फरिश्ते, जो कहीं पर सख्त थे!
अब खिला रहे रोटियाँ, मिलें सड़क पर वक्त वेवक्त जो।।

अल सुबह से चौकस रहकर, कर रहे निगरानी जो।
प्राण दाव पर खुद के लगाये, करते सड़कों पर रखवाली जो।।

ईश्वर तुल्य डाक्टर और नर्स, लड़ रहे कोरोना से जंग।
जान बचाते आम जन की, ऐसे वीर योद्धाओं को नमन।।

है बहादुर दुनिया भर के, आज सफाई कर्मी भाई।
निष्ठा से प्रतिपल जुटे है, स्वच्छता की करते अगुआई।।

हे! देश के गौरव तुम, कर्मवीर, लौह पुरूष।
देश के तुम वीर सपूतों, तुम को है शत-शत नमन।

इस विपदा की सघन घड़ी में, दीप जला हम सब साथ है।
जीत जायेंगे कोरोना जंग हम, माँ शक्ति अपने साथ है।

पेड़ करता है सवाल

हर प्रहार पर घायल पेड़, मानव से करता है सवाल।
क्या तुम ही वह आदमी हो?

कभी तुमने ही वृक्षों की पूजा की, आरती उतारी।
भीषण गर्मी और धूप में, शीतल छाया तले,
दुपहरी गुजारी।
ऋषि, मुनियों की संतान,
क्या तुम ही वह आदमी हो?

सूखा, अकाल और विपदायें छेलते तुम।
फिर भी वृक्षों को काटते तुम!!
पानी बरसाने इंद्र देव को मनाते,
क्या तुम ही वह आदमी हो?

तुम से ही रूष्ट धरती, करती है क्रन्दन।
विकास के नाम पर है मौतो को निमंत्रण।
कभी अपिक्को, चिपको आंदोलन चलाया!
क्या तुम ही वह आदमी हो?
क्या तुम ही वह आदमी हो?

नारी

सदियों की ये रीति मुझे प्रतिपल खलती है।
प्रेम, करूणा और ममता की देवी,
फिर नारी ही जीवन पर्यांत पीड़ा सहती है।।

पंख दिये ईश्वर ने फिर भी पाबंदी के घेरों में है!
घर आंगन गलि गलियारे, बेटों के सुख साधन क्यों है?
बेटी पराया धन! ये बात शूल सम चुभती है।
प्रेम, करूणा,,,,,,।

रहे सुरक्षित नारी अस्तित्व अपना आकाश खुद रच लेगी।
वह टूटती पिघलती है पर, याचना नही खुद लड़ लेगी।
पुरूष है प्रेम नारी अर्धांगिनी,
बस इतनी ख्वाहिश मेरी कलम लिखती है ।

प्रेम, करूणा और ममता की देवी,
फिर नारी ही क्यों जीवन पर्यांत पीड़ा सहती है।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

प्रेमलता शर्मा 'आयुमी'

पता- असेंबली हॉल के सामने,
शास्त्री वार्ड, सदर कॉलोनी,
जिला-नरसिंहपुर (म.प्र.)

Mobile - 7974459006

कोरोना वायरस से सुरक्षा के लिए हम सभी घरो के अंदर समय बिता रहे है। इसी खाली समय का सदुपयोग करने अंतरा शब्दशक्ति ने रचनाएँ आमंत्रित की, जो सराहनीय है। मानवीय कृत्यों का दुखद परिणाम (कोरोना) देख मन आहत है।

भूखे, प्यासे, मजदूर लोग सड़कों पर बेसहारा है। अन्न का दाना, पानी की एक-एक बूंद कितनी महत्वपूर्ण है। प्रार्थना करती हूं, हमारा जीवन जल्द ही सामान्य हो।

जिन्दगी थम सी गई है किन्तु मैने कलम को रूकने नही दिया। वर्तमान संकट मे कुछ सार्थक लिखने मन के सागर से भावों के मोतियों को शब्द देने का प्रयास किया है। यूं भी कह सकते है साहित्य सागर में भावों के मोती बिखेरने का प्रयास है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-127-5

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/